

शिवोहम शिवोहम शिवोहम  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम

आत्मा ने पस्मात्मा को लिया  
देख ध्यान की दृष्टि से ।  
प्रकाश हुआ हृदय-हृदय,  
बेड़ा पार हुआ इस सृष्टि से ।

है एक ओंकार निरंजन निरंकार,  
है अजर अमर आकर  
विश्वधार मन भजे ।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम

भूख में तपसी तप रहा,  
भोजन बीच पठाय ।  
विलप में साधु हंस रहा,  
अपना ही उपजा खाय ।  
शेष अशेष विशेष में  
समर्पण के भाव में ।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम...  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम..

ठहर शांत एकांत में,  
साधके मूलाधार ।  
सर्जन स्वाधिष्ठान से,  
सूर्य मणि चमकार ।  
विशुद्धि आज्ञा सहस्रार  
तक गूँजे अनाहत ।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम..  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम..

खाली को तो भर दिया,  
भरे में भरा न जाए ।  
पानी में प्यासा रहा,  
तट पे बैठ लखाय ।

प्रश्न व्यस्र में उलझ-उलझ  
हां बिरथा गया जन्म ।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम..  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम  
शिवोहम शिवोहम शिवोहम